

**चंबल क्षेत्र में शाक्त सम्प्रदाय एक ऐतिहासिक सर्वेक्षण**
**डॉ. भारती शर्मा**
**जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर**
**Paper Received date**

05/04/2025

**Paper date Publishing Date**

10/04/2025

**DOI**
<https://doi.org/10.5281/zenodo.15337952>

शाक्ति की उपासना करने वाला जनमानस का समुदाय शाक्त समप्रदाय के नाम से जाना जाता है जिसमें देवी/शक्ति पूजन परम्परा मिलती है। हाँ समादाय के समान ही शाक्त समादाय की प्राचीनता भी प्रागैतिहासिक युग तक जाती है। प्रारम्भिक काल में देवी की उपासना माता के राम में अधिक लोकप्रिय हुई। जिसमें शक्ति को स्त्री या देवी के राम में मान्य देवता के समान स्थान दिया गया है। सृष्टि के विकास या उदभव का मूल स्रोत शक्ति ही है। महाभारत और पुराणों दो अनुसार शक्ति शो सम्पन्न देवी कहकर सम्बोधित किया गया है, और इनमें शक्ति पूजा को उल्लेख भी प्राप्त होते हैं।

महाभारत में उल्लेख किया गया है, कृष्ण ने अपने सखा अर्जुन को महाभारत के युक्त से पूर्ण दुर्गा शक्ति की उपासना करने की सलाह प्रदान की थी जिसमें अर्जुन ने दुर्गा की स्तुति कई नामों से की हैं जो उमा, विजय काली कुमारी, महाकाली कपाली, काराला कांतरवासिनी, चण्डी, कौशिकी तथा कात्यायनी, चामुण्डा आदि प्रमुख है। (1) दुर्गा देवी को कौशिकी नाम की उत्पत्ति पार्वती माता के शरीर के कोश से निकलने के कारण पडा, कालिका नाम की उत्पत्ति पार्वती को काले पड़े हुये शरीर से हुई जो अंबिका के शरीर से निकल जाने के कारण पडा। चामुण्डा नाम के उत्पत्ति चण्ड-मुण्ड को संहार करने के कारण हुई (2) योन उपनिषद उमा, हमायती को सर्वशक्ति सम्पन्न देवी कहता है। प्राचीन साहित्य में शक्ति को दो रूपों का उल्लेख प्राप्त होता है प्रथम ये शिव की अर्द्धांगिनी उमा पार्वती यो नाम से जानी जाती हैं दूसरा रूप स्वतंत्र पराभवा शक्ति का है। (3)

**IMPACT FACTOR**
**5.924**

भाग्यत पुराण के अनुसार दुर्गा देवी सम्पूर्ण सृष्टि को शक्ति तथा आश्रय प्रदान करती हैं जिसका विवरण सूत्रधार और श्री तत्त्वनिधि में भी प्राप्त होता है। (4) शाक्त समादाय का उदय कब हुआ इसके विषय में रमष्ट प्रमाण उपलब्ध नहीं होते, परंतु सिंधुघाटी सभ्यता से प्राप्त हुई मातृदेवी की प्रतिमा से शक्ति का उदय माना जाता है। (5) चण्डी और अंबिका कहे जाने वाली दुर्गा या महिषासुरमर्तनी देवी का प्रादुर्भाव प्राच्या, विष्णु और महेश त्रिमूर्ति के प्रचण्ड तेज से हुआ है। शक्ति की उत्पत्ति को लेकर विद्वानों में मतभेद है इसको लेकर विद्वानों की अपनी अलग-अलग राय है कुछ विद्वान शक्ति पूजा का आरंभ कृष्ण की सांख्यकारिका से मानते हैं। उडिया बाबा के अनुसार शक्ति तत्त्व की व्याख्या सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड निर्विशेष शुद्ध तत्त्व का आधार है। (6) श्री अनंताचार्य स्वामी जी ने अपने कल्याण शक्ति अंक में शक्ति की व्याख्या करते हुये वास्तु के कार्य उत्पाद उपयोगी अपृथक सिद्ध धर्म विशेष को कहा है। (7) भण्डाकर महोदय अपने वैदिक साहित्य में किसी भी स्थान पर शक्ति समादाय का उल्लेख नहीं करते हैं। सिंधु घाटी सभ्यता शाक्त धर्म की उपासना करता था। सिंधु समाज मातृ सत्तात्मा प्रधान था इसलिये प्रतीत होता है कि यह शक्ति या मातृदेवी को पूजते थे।

सिंधु घाटी सभ्यता के काल में ऐतिहासिक स्तर पर शाक्त धर्म के प्रमाण स्पष्ट रूप से तृष्टिगोचर होते दिखाई देते हैं। सिंधु वासी मातृदेवी या शक्ति की उपासना शिव की अर्धांगिनी मानकर पूजते थे (8) इसलिये इस समय से ही शक्तियाद को जन्म मिला। इस काल में देवी की उपासना का बहुत अधिक महत्व था उनकी पूजा शिव से भी पहले किये जाने के साक्ष्य प्राप्त होते हैं, इसलिये सिंधु सभ्यता से टेरा कोटा की निर्मित कई नारी प्रतिमाएँ प्राप्त हुई हैं। जो गले में चार, मेखला और वस्त्रों से सुशोभित हैं। (9) पुराणों के अनुसार शक्तिदेवी का निवास स्थान विव्यपर्वत बताया जाता है। जब कंस के द्वारा कन्या राम में देवकी की संतान को कृष्ण ने शिला पर पटका था तो यह आकाश मार्ग से विव्यपर्वत पर चली गई और यहीं निवास किया। महाभारत के विराट पर्व के अनुसार मद्दाराज युधिष्ठिर ने देवी की स्तुति कई नामों से की है जिसमें उन्हें कृष्ण की वहन, नारायण की परमप्रिया, महिषासुरमर्दिनी, विंध्यवासिनी यशोदा के गर्भ से उत्पन्न आदि का गया है।



## International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

देवी को तीन रूपों की प्राप्ति होती है जो निम्न प्रकार है-

1. शांत या सौम्य राप
2. उग्र मा प्रचण्ड रूप
3. कामप्रधान राम

1. शांत या सौम्य राप - इस राप में उमा पार्वती तथा लक्ष्मी आदि देवी के सौम्य रूप को जाना जाता है। देवी के सौम्य रूप का पूजन सामान्य जनता के द्वारा किया जाता था।

2. उग्र मा प्रचण्ड राप - दुर्गा कापाली, भैरवी, चण्डी आदि नामों से देवी को उग्र राप को जाना जाता है। कालामुख समादाय एवं कापालिक सम्प्रदाय के लोगों के द्वारा देवी को इसी रूप की आराधना की जाती हैं जिसमें नरबलि तथा पशुपति विज्ञान को भी शामिल किया गया है।

3. कामप्रधान राम - अनिता, आनंद भैरवी तथा त्रिपुर सुंदरी देवी के कामप्रधान राम हैं। इसमें कक्षा गया है कि शक्ति के द्वारा विश्व का सृजन किया जाता है और देवी के त्रिपुरासुंदरी राम की व्याख्या की गई है।

शाक्त समादाय की राय समादाय से निकटता स्थापित हैं कापालिक शक्ति की उपासना के साथ भगवान शिव की अराधना भी किया करते थे इसलिये कहा जा सकता है सात कौल और राँय कापालिक समान आचरण के थे। कौल शातों को आचरण में राय कापालिकों की भाँति मांस, मदिरा का सेवन किया जाता था ।

गुप्तकाल में पौराणिक हिंदू धर्म की उन्नति होना प्रारंभ हो जाती है। हर्षकालीन समाज में शक्ति पूजा का प्रचलन अधिक रहा है। हर्षचरित में दुर्गा देवी की पूजा का उल्लेख कई स्थानों पर प्राप्त होता है।

चम्बल क्षेत्र में शाप संप्रदाय का ऐतिहासिक विकास

शोध क्षेत्र में शक्ति पूजा की परम्परा अति प्राचीनकाल से ही प्रचलित रही है। चम्बल संभाग के मुरैना जिले से पार्वती की प्रतिमा प्राप्त हुई है जो सिंह पर सवार है। मुरैना जिले के ऐंती नामक स्थान से 11वीं शताब्दी ई. की सरस्वती देवी की प्रतिमा प्राप्त होती है जो कपघात कालीन है (10) नरेसर से 9<sup>वीं</sup> -10<sup>वीं</sup> शताब्दी में निर्मित माता के मंदिर की प्राप्ति होती है जहाँ से पंचतपत्स पार्वती की प्राप्ति हुई। (11) ककनमठ मंदिर से 11वीं शताब्दी ई. की चतुर्भुजी दुर्गा शिल्पांकित है। मुरैना को सुहानियों से (12) 11<sup>वीं</sup> सदी की गजलक्ष्मी की प्रतिमा प्राप्त होती है तथा सेवई (13) से शक्ति की प्रतिमा प्राप्त होती हैं। उपर्युक्त प्राचीनतम प्रमाणों के आधार पर स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि चम्बल संभाग में शात धर्म का प्रचलन था जो वर्तमान समय तक प्रचलित है।

लक्ष्मी - श्री को राप में लक्ष्मी शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम में प्राप्त होता है। जो अमूर्त विश्लेषण के रूप में प्रयुक्त होता है जिसका तात्पर्य कांति, सम्पत्ता एवं सौंदर्य होता है। (14) इन्हीं का प्रयोग अथर्ववेद में भी किया गया है। (15) यजुर्वेद यो पुराषा में लक्ष्मी का उल्लेख श्री शब्द से किया गया है जिसका अर्थ होता है कि मनुष्य जन्म लेते ही सौ प्रकार की लक्ष्मीयों से घिरा होता है जिनमें से कुछ अच्छी होती हैं तो कुछ बुरी लक्ष्मी के विस्तृत स्वराम की प्राप्ति ग्येत के पाँचवें मण्डल में होती है। (16) मुरैना जिले के सुहानियों ग्राम में स्थित वनमठ मंदिर 11वीं सदी की निर्मित चतुर्भुजी गजलक्ष्मी का स्थानक मुद्रा में प्राप्त होती है। इसका प्राचीन प्रमाण साँची के तोरण से भी प्राप्त होता है। (17)

पार्वती पौराणिक गाथाओं के अनुसार माता पार्वती पर्वतराज हिमायन की कन्या थी इस कारण इनका नाम पार्वती रखा गया। अनेक धर्मग्रंथो विष्णुधर्मोत्तर पुराण, रापमण्डन, दीपार्पण, कुमार-संभव आदि में इनका विस्तृत रूप से विवरण प्राप्त होता है। विष्णुधर्मोत्तर पुराण व कुमारसंभव में उन्हें गौरी, उमा, अपर्णा एवं पार्वती कर संबोधित किया गया है। (18) चन्वा संभाग के मुरैना जिले में स्थित सुहानियों को ककनमठ देवालय से चतुर्भुजी पार्वती की प्रतिमा प्राप्त होती है जो



## International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

पुरातत्य संग्रहालय गुजरी महल ग्वालियर में संग्रादीत है। इसी प्रकार से नरेसर, बटेसर पडायली, ऐती देयालयों से भी आसनस्थ पार्वती की प्रतिमा समभंग मुद्रा में प्राप्त होती है।(19)

सप्तमातृकाएँ - हिंदू धर्म के शाक्त समादाय में सप्तमातृकाओं का उल्लेख सात देवियों के रूप में हुआ है। सप्तमातृका दो शब्दों से मिलकर बना हुआ है सप्त एवं मातृका जिसमें सप्त का अर्थ सात एवं मातृका का अर्थ माता होता है। जिसमें सात देवियों ब्राह्मणी इंद्राणी, वैष्णवी, याराडी, चामुण्डा, कौमारी और माईलवरी है जिनका उल्लेख ऋग्वेद से प्राप्त होता है। इनका पूजन भारत वर्ष में वैदिक युग से ही प्रारंभ हो गया है। (20) में महोदय के कथनानुसार सिंधु घाटी सभ्यता के प्रत्येका घर में मातृका के लिए एक देवकोष्ठ का निर्माण किया जाता था | (21) मुरैना स्थित नरेसर से विक्रम संवत् 1245 की एक प्रतिमा की प्राप्ति होती है जिसके अधोभाग पर रावल यामदेव का उल्लेख मिलता है जो इस बात की पुष्टि करता है कि इस व्यक्ति के द्वारा नरेसर में अनेक प्रतिमाओं की स्थापना कराई गई थी जिनके नाम देवांगना, उमा, भैरवी, वाराणी, काँथेरी, वैष्णवी, इंद्राणी, कालिका नियजा, मघाली आदि है, इन प्रतिमाओं पर यामदेव प्राणमति लिखा गया है (22) इसी प्रकार सप्तमातृकाओं का अंकन बटेसर, ऐती, सुहानियों और पत्रावली से भी प्राप्त होता है।

इस प्रकार इस क्षेत्र में शाक्त सम्प्रदाय से सम्बंधित अनेक उदाहरण देखने को मिलते हैं जो शीय धर्म के साथ साथ शायत सम्प्रदाय के प्रचलन के प्रमाण प्रस्तुत करते हैं।

संदर्भ सूची

1. महाभारत भीष्म पर्व अध्याय 30 23.4
2. यादव, योगेश - उत्तरी मध्यप्रदेश का भौतिक तथा सांस्कृतिक जीवन प्रारम्भ से बारहवीं शती तक अप्रकाशित शोध प्रबंध 2010 पृष्ठ क्रमांक 257
3. यही पूर्वोक्त 258
4. यही पूर्वोक्त



## International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

5. यही पूर्वोक्त
6. उडिया बावा-शाक्ति तत्त्व (कल्याण शाक्ति अंक) सम्पादित पृष्ठ 29
7. रयामी अनंताचार्य-शाक्ति सर्व शक्तिमर्या महालक्ष्मी (कल्याण शाक्ति अंक) सम्पादित पृष्ठ 25.
8. भण्डावर आर. जी. - पूर्वोक्त पृष्ठ 163
9. शर्मा मथुरा बाल-भारतीय संस्कृति का विकास पृष्ठ 44-45
10. पचौरी उमाशंकर-पूर्ण मध्यकालीन उत्तरी म.प्र. में ही शाक्त तथा लौकिक धार्मिक समादायों का समालोचनात्मक अध्ययन शोध प्रबंध (अप्रकाशित ) जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर 1993.
11. मैकी - जर्नल ऑफ रायल सोसाइटी ऑफ आर्ट्स भाग 2 पृष्ठ 215-220
12. गिडियन, नवीन एवं दुबे अनिल, मुरैना का पुरातत्त्व (प्रागैतिहासिक काल से 1300 ई. तक) सागर प्रकाशन, सागर 2005 पृष्ठ 97
13. यही पूर्वोक्त पृष्ठ 98
14. ऋग्वेद 1.179.1
15. अथर्ववेद 20.143.2
16. यजुर्वेद 7.115.31
17. गिडियन, नयीन एवं दुबे अनिल, मुरैना का पुरातत्त्व (प्रागैतिहासिक काल से 1200 ई. तक) सागर प्रकाशन, सागर 2005 पृष्ठ 102
18. यी पूर्वोक्त पृष्ठ 97
19. यही पूर्वोक्त पृष्ठ 98
20. मिश्रा.ओ.पी. मदरगाडेय इन सेंट्रल इंडिया दिल्ली. 1985 पृष्ठ 124
21. शर्मा, शियाणांत -चन्वत्र संभाग की संस्कृति अभिलेखिक अध्ययन (1800 ई. तक) अप्रकाशित शोध प्रबंध 1999 पृष्ठ 22
22. यही पूर्वोक्त